विशेषांक संपादकीय

बेग़मपुरा
स्त्री विमर्श का वितान

डॉ. पूरन सिंह
विशेषांक संपादक
9868846388

बेग़मपुरा:सभ्यता का आह्वान' पत्रिका का पांचवा अंक स्त्री विमर्श की कहानियाँ निकालते हुए हमें खुशी हो रही है। हमने उस परिपाटी को यहां तोड़ा है, जिसमें महिला पर यदि कोई विशेषांक निकलेगा तो वह महिला ही निकालेगी। महिला मुद्दों पर जितना एक महिला संवेदनशील हो सकती है, उतना एक पुरुष को भी होना जरूरी है। जब तक एक पुरुष महिला कथाकारों के कार्य, में से, गहनता के साथ नहीं गुजरेगा, भला बताईये वह उन्हें और उनके मुद्दों को कैसे समझने का दावा कर सकता है। फिर देखिये बात दावा करने और न करने की भी नहीं है, बात है साथ देने की, साथ खड़े होने की, लेकिन यह कैसे पता चलेगा कि साथ दिया जा रहा है, साथ खड़ा हुआ जा रहा है, यह तभी होगा जब कुछ करके दिखाया जाएगा। इस पत्रिका का हिस्सा पहले ही प्रो. नीलिमा बागड़े, डॉ. सरिता और प्रो. नीलम हैं, जिनसे इस काम को कराया जा सकता था, लेकिन जैसा कि सामूहिक फैसला हुआ कि महिला को महिला तक ही क्यों सीमित रखा जाए, उन्हें दौड़ने के लिए पूरा मैदान क्यों न दिया जाए, तब सोचा गया, महिलाओं को पूरे पंख फैलाकर उड़ने के लिए पूरा आकाश देना होगा, इसलिए इस स्त्री विमर्श की कहानियाँ के लिए किसी पुरुष को चुना जाना तय हुआ, और आगे महिला संपादकों को इतर विषयों पर संपादन की जिम्मेदारी दी जाए। संयोग से मुझे यह जिम्मेदारी मिल गई। हालांकि पत्रिका महिला प्रतिनिधित्व के लिए सचेत रही, इसी वजह से डॉ. वंदना को यहाँ संपादक मंडल में जगह दी गई है। आगे आने वाले अंकों में आप उनके काम को यहाँ देख पाएंगे।

कथा और लघुकथा दोनों में मेरा दखल रहा है, लेकिन अब मामला मेरा नहीं था, महिला कथाकारों का था और मुझे महिला कथाकारों की जानकारी भी अपेक्षाकृत कम थी। यहाँ आकर मुझे भारी समस्या हुई। दरअसल, महिला कहानीकारों से कहानी मंगवाना मेरे लिए कठिन कार्य रहा फिर भी हाँ कर दी। युवा कथाकार डॉ. वंदना से महिला कथाकारों के नाम सुझाने की मदद माँगी गई, वे सहर्ष सहयोग करने के लिए तैयार हो गई। प्रो. नामदेव का

काम इस संबंध में मेरी जानकारी में आया था, सो मैंने उनसे भी सहयोग का अनुरोध किया। व्यस्त होने के बावजूद उन्होंने सहयोग किया, प्रो. नामदेव सर ने तो पूरी सूची ही भेज दी। फिर क्या था, मुहिम शुरू हो गई। सभी कहानीकारों को फोन किया गया। सभी ने एक ही फोन पर कहानियाँ भेज दीं। किसी ने थोड़ा समय लिया लेकिन भेजीं। जो काम मेरे लिए बहुत कठिन था, वह सरल हो गया। कहानियाँ बहुत सुंदर और विचारपरक रहीं।

हमारी सिर्फ एक ही इच्छा थी कि नए कहानीकारों को ज्यादा स्थान मिले। ऐसा नहीं है कि हमने स्थापित कहानीकारों को महत्व न दिया हो। पूरा महत्व दिया लेकिन उनका रुझान बहुत ठंडा ही रहा। ऐसा क्यों हुआ होगा, व्यस्तता तो बड़ा कारण है ही, इसी के साथ, आज के समय में, बड़े होते हुए बच्चों के साथ चलना भी एक बड़ा और जटिल काम हो गया है, उनके बारे में सोचना, उनके साथ तालमेल बनाना भी आधुनिक जीवन की नई चुनौती बनकर उभर आई है, उनसे जूझने में एक कथाकार के लिए जो महत्वपूर्ण होता है, वह कम महत्वपूर्ण हो जाता है, ध्यान कई-कई हिस्सों में बंट जाता है, इस वजह से भी हमारे कई बार के आग्रहों पर कम ध्यान गया होगा, लेकिन मार्क्सवादी, जनवादी, प्रगतिशील या इसी तरह के अन्य आंदोलनों को लेकर चलने वाली पत्रिकाओं में उनकी रचनाएं हैं, पर हमारे पास नहीं है, तब यह महसूस होना स्वाभाविक है, कि 'हमारा' (एक भाव) आंदोलन के स्थान पर 'मैं' (एक भाव) आंदोलित हो रहा है। 'मैं' के भाव को जहाँ उचित भाव मिलेगा अर्थात् मैं जहाँ अधिक लाभांवित होगा, उधर का ही 'मैं' महत्व समझेगा। इस तरह तो जान पड़ता है कि साहित्य सेवियों में आंबेडकरवादी साहित्यिक आंदोलन की भावना भवन निर्माण के स्थान पर किराये का मकान लेकर गुजर-बसर करके खुश हो रही है। खैर! ऐसा हो भी सकता है, और नहीं भी हो सकता है। जिन तक हमारी आवाज पहुँचनी चाहिए थी, वहाँ तक पहुँची, जहाँ तक नहीं पहुँच सकती थी, वहाँ तक भला कैसे पहुँचती।

अलग-अलग आयु, आय, सामाजिक परिवेश के साथ शहर और देहात तक की महिला कथाकार यहाँ इस अंक के साथ जुड़ी हैं। उन सबकी कहानियों ने स्त्री विमर्श का एक विशाल वितान यहाँ तान दिया है। कहानियों में इकहरापन, एकरूपता, एक जैसे मुद्दे नहीं हैं, बल्कि इस अंक में विमर्श का कोना-कोना स्पर्श होकर गुजरता हुआ नजर आता है।

प्रो. नामदेव सर और प्रो. महेंद्र सिंह बेनीवाल सर का भी आभार कि उन्होंने मेरा मोरल सपोर्ट भी किया। डॉ. वंदना का पत्रिका के इस अंक को तैयार करने में कई तरह से सहयोग रहा है। अंत में, सभी कथाकारों का आभार, जिन्होंने अपनी उत्कृष्ट रचनाएं भेजीं। हमारा सहयोग किया। ऐसा विश्वास है कि आगे भी वे पत्रिका के साथ रहेंगी। संपादक मंडल के सभी सदस्यों का धन्यवाद करता हूँ। और हाँ इसी के साथ कहना चाहूँगा कि हमें आपकी प्रतिक्रिया और सुझाव की प्रतीक्षा रहेगी, जिससे हमें आगामी अंकों को तैयार करने का हौसला मिलेगा।

इस अंक में अपना रचनात्मक सहयोग करने के लिए हम डॉ. सुशीला टाकभोरे, कमलेश चौधरी, डॉ. कविता विकास, पुष्पा विवेक, डॉ. सुमा टी आर, अनीता भारती, डॉ. सुमित्रा मेहरोल, डॉ. पूनम तुषामड़, डॉ. राजकुमारी, सलीमा, डॉ. कनक लता, सोमा विश्वास, डॉ. वंदना, डॉ. प्रिया राणा, अंजली कॉजल, सुनीता बौद्ध, डॉ. मोहिनी 'मिंकी', डॉ. तपस्या चौहान, डॉ.धनेश्वरी, डॉ. यशोदा कुमारी, डॉ. दीपा और डॉ. प्रियंका सोनकर के आभारी हैं।

इन कहानियों में स्त्री-पुरुष सभी की आवाज है। शोषण और अन्याय पर केवल विमर्श ही नहीं है, बल्कि कई सारी कहानियाँ विमर्श से आगे बढ़ी है और दर्शन की सीढ़ियाँ चढ़ते हुए नजरिये में दखल की सार्थक कार्यवाही करती हैं। मुक्ति के लिए शिक्षा की जरूरत पर बल देती हैं। कई कहानियाँ ऊंचे पदों पर पहुँचने की व्यक्तिगत उपलब्धियों को नकारती हुई जान पड़ती हैं, क्योंकि ऊंचे पदों से नजरिया नहीं बदलता है, नजरिया तभी बदल सकता है, जब जातिवादी मिथ्या दृष्टि के समक्ष उसे मात देने के लिए सम्यक दृष्टि की सैद्धांतिकी मौजूद हो। अनेक कहानियाँ विमर्श के आरंभिक पायदान पर और कुछ कहानियों से विमर्श से आगे बढ़कर दर्शन के पायदान पर पहुंच बनाई है, हालांकि दर्शन के प्रति अभी समझ में परिपक्वता का अभाव है, लेकिन भाव से अभाव दूर होते हैं, बहुत जल्द यह कमी भी साहित्य में दूर होगी, इसी कामना के साथ 'बेगमपुरा:सभ्यता का आह्वान' का 'स्त्री विमर्श की कहानियाँ' सादर भेंट करते हैं।❑